छोटी सी भूल

एक विधवा स्त्री और उसका इकलौता पुत्र गाँव में रहते थे । वह महिला बहुत कठिनाई से मेहनत-मजदूरी कर अपना और अपने पुत्र का पालन कर रही थी । माँ की इच्छा थी कि उसका बेटा पढ़-लिख कर बड़ा आदमी बने । इसलिए उसने उसे गाँव के ही एक विद्यालय में भर्ती भी करा दिया ।

एक बार वह बालक अपने साथी की पेंसिल चुरा लाया। घर आकर उसने वह माँ को दे दी । माँ ने चुपचाप उसे रख लिया । धीरे-धीरे वह और भी सामान लाने लगा। माँ ने सोचा कि वह छोटा है, डाँटने से नाराज न हो जाये, इसलिए वह चुप ही रहती । अब वह इधर-उधर से पैसे भी लाने लगा । इसी प्रकार होते-होते वह एक बड़ा अपराधी बन गया । एक बार डकैती और हत्या के अभियोग में वह पकड़ा गया और उसे फाँसी की सजा घोति हो गई ।

फाँसी से पूर्व जब उसकी अंतिम इच्छा पूछी गयी, तो उसने अपनी माँ से मिलना चाहा। जब माँ सामने आयी, तो उसने कान में कुछ बात कहने के बहाने माँ का कान काट लिया । माँ दर्द से चीख पड़ी । वहां खड़े लोग उसकी आलोचना करने लगे।

कारण पूछने पर उसने कहा कि मेरी इस दुर्दशा की दोषी मेरी माँ ही है । जिस दिन मैंने पहली बार चोरी की थी; यदि उसी दिन माँ ने कान खींचकर रोक दिया होता, तो मैं आज यहां नहीं होता । इसलिए मैंने माँ का कान काटा है ।

स्पट है कि भूल चाहे छोटी ही हो; पर तुरन्त टोक देने से वह बड़ी होने से बच जाती है ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय